International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 29-10-2020; Accepted: 14-11-2020; Published: 28-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 105-108

समकालीन हिंदी कथालोचना और मधुरेश

अशोक कुमार मौर्य
हिंदी वभाग रा.तु.म.नागपुर वश्व वद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
नया साहित्य अपने लए नया मूल्य बोध सृजित करता है नए मूल्य पुराने के वरोधी नहीं पर अनिवार्यतह उसके अनुगामी भी नहीं होते। जी वत साहित्य वही है जो अपनी परंपरा परिवेश और समकाल से संबद्ध और संवादरत हो। अपनी परंपरा परिवेश और समकाल से उसकी यह संबद्धता और संवादध र्मता ही परंपरा के प्रवाह और आधुनिक समकालीनता के नैरन्तर्य का आधुनिक और वैज्ञानिक आधार है । समकालीन साहित्य में कथा साहित्य की परंपरा नई नहीं है, कथा कहने और सुनने की परंपरा का निरंतर वकास होता रहा है। कथा की संवेदना मनुष्य के इर्द- गर्द ही सृजित होती है। मनुष्य के सुख-दुख, हास-परिहास, उ चत- अनु चत, न्याय-अन्याय, के साथ-साथ समाज के शक्षण एवं मनोरंजन, कथा साहित्य की आधार शला नि र्मत करते हैं क्यों क साहित्य की संवेदना में मनुष्य और उसका समाज सन्निहित है तो उस साहित्य का अपना प्रतिमान मानदंड एवं मूल्य बोध भी होगा जिससे क साहित्य का मूल्यांकन भी हो सके। साहित्य को देखने परखने और उसकी समीक्षा आलोचना एवं मूल्यांकन से साहित्य को समाज उपयोगी और शास्त्रीय बनाया जा सकता है ।शास्त्रीयता से मेरा आशय वशुद्ध साहित्य रूप है। भारतीय हिंदी साहित्य आलोचना नाट्य-काव्या स्रत रहा है। परन्तु आधुनिक हिंदी साहित्य में जैसे-जैसे गद्य का वकास हुआ वैसे-वैसे आलोचना के रूप और पद्धति में भी परिवर्तन देखने को मलता है। इसी प्र क्रया में कथा लोचना का भी वकास संभव हो सका।

मूल शब्द: समकालीन हिंदी कथालोचना, मधुरेश

प्रस्तावना
हिंदी साहित्य में कथालोचना का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, हिंदी गध साहित्य की परंपरा में कहानी और उपन्यास 19वीं सदी के उत्तरार्ध एवं बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में प्रारं भक स्थिति में था। बीसवीं सदी में कथा साहित्य का निरंतर वकास हुआ और मनुष्य एवं समाज के ज्यादा समीप दिखने लगा। कथालोचना का प्रारं भक दौर पुस्तक समीक्षा एवं टिप्पणी के रूप में था जैसे क, बाबू श्यामसुंदर दास की पुस्तक "साहित्यालोचन" (1922) कहानी आलोचना की शुरुआत होती है । हिंदी कहानी के सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना का व्यवस्थित स्वरूप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के "हिंदी साहित्य का इतिहास" (1929) में मलता है । जिसमें कहानी की व वध पक्षों को समझाया गया। कहानी आलोचना की परंपरा में डॉ रामकुमार वर्मा की पुस्तक "साहित्य लोचन" (1930) कहानी के संरचनात्मक रहस्य को खोलती है । इसी क्रम में न लन वलोचन शर्मा का लेख "आज की छोटी कहानी" महत्वपूर्ण है। राम वलास शर्मा ने प्रेमचंद की कहानी को केंद्र में रखकर कहानी कला की आलोचना को वस्तार दिया /लक्ष्मी नारायण लाल ने अपने शोध ग्रंथ "हिंदी कहानी में शल्प व ध का वकास" कहानी

के प्रारंभ एवं वकास के साथ कहानी के तत्व, संवेदना एवं शल्प के रहस्य को खोलने की भरपूर को शश की है । जगन्नाथ प्रसाद शर्मा की पुस्तक "कहानी का रचना वधान" हिंदी कहानी की संरचनात्मक ग्रं थ को समझाने में बहुत ही महत्वपूर्ण है। कथालोचना लखने की व्यवस्थित शुरुआत नेमीचंद जैन के "अधूरे साक्षात्कार" से होती है जिसमें कथा वन्यास के साथ कहानी कला, संरचना एवं संवेदना के व वध पहलुओं को सूक्ष्म तरीके से समझाया गया है । वश्वनाथ त्रिपाठी की पुस्तक "कहानी के साथ साथ" में कहानी की संवेदना को समष्टि और व्यष्टि रूप में वस्तार पूर्वक समझाया है। *स*माज में मनुष्य जीवन पर पड़ने वाले वैचारिक प्रभावों को कथा ववेचना के द्वारा उद्घाटित कया है। देवीशंकर अवस्थी ने "नई कहानी संदर्भ और प्रकृति" का संपादन कया, जिसमें व भन्न कहानीकारों एवं आलोचकों के नई कहानी संबंधी वैचारिक लेख संपादित है । नई कहानी के अर्थ परिभाषा से लेकर उसके संरचनात्मक उपलब्धियों पर वस्तृत वचार- वमर्श प्रस्तुत है। *उ*नकी दृष्टि रचना के रूपछंद की मीमांसा पर रहती है उनके अनुसार आलोचक का दायित्व जीवन की उस गहराई की थाह ली जाए जहां से लेखक अपनी संवेदना की डोर के सहारे अनुभव को संचकर कहानी में लाता है।

कथालोचना के संदर्भ में नामवर संह की पुस्तक "कहानी नई कहानी" अद् वतीय है। कथा लोचना के प्रतिमानीकरन की दिशा में यह वचारणीय पुस्तक है। कहानी की संरचना एवं पाठ प्र क्रया के साथ-साथ कहानी की सार्थकता, सफलता, ऐतिहा सकता, नवीनता,आधुनिकता पर वस्तृत वचार वमर्श हुए हैं । कहानी में "रूप और शल्प" के स्तर पर नए प्रयोग हुए है। डॉ. नामवर संह ने कथानक को कहानीकार की जीवन-दृष्टि, सामाजिक चेतना और रचनात्मक उद्देश्य के अनुसार कया जाने वाला कथ्य-संयोजन न मानकर केवल मनोरंजन, नाटकीय एवं कुतूहलपूर्ण 'घटना-संघटन' को माना है। साधारण पाठक की 'पाठ-प्र क्रया' को वशेष महत्व देते हैं 'कथानक के ह्रास' को उन्होंने कहानी के वकास के लए आवश्यक माना । नामवर संह "कहानीपन" के प्रबल पक्षधर हैं। वे कहते हैं-''क वता में जो स्थान लय का है, कहानी में वही स्थान कहानीपन का है । कहानी-समीक्षा के लए उन्होनें कहानी के प्रमुख तत्वों एवं उनके कहानी में योगदान को भी मूल्यांकन-दृष्टि प्रदान की है।नयी कहानी की प्रमुख वशेषता "सांकेतिकता" को माना है। 'प्रभावान्विति' को कहानी की संप्रेषणीयता के लए अनिवार्य शर्त माना है । आज की कहानी की सफलता का अर्थ है "कहानी की सार्थकता"।'नई कहानी' आन्दोलन के प्रवक्ता बनकर उन्होनें 'नयापन' कहानी में खोजने का प्रयास कया है।

कथा लोचना के वकास में परमानंद श्रीवास्तव, मधुरेश, शंभू गुप्त, सुरेंद्र चौधरी, वजय मोहन संह, वजय बहादुर संह, पुष्पपाल संह, राजेंद्र यादव, गोपाल राय, आदि का महत्वपूर्ण स्थान है ।कथालोचना में 'समकालीन कथा साहित्य: सरहदें और सरोकार' 'हिन्दी कहानी: वक़्त की शनाख़्त और सृजन का राग' 'समकालीन कथा साहित्य' 'कथा लोचना के प्रतिमान' रोहिणी अग्रवाल की कथालोचना संबंधी महत्वपूर्ण पुस्तकें है। समकालीन कथा लोचना की वकास में सुरेंद्र चौधरी नामवर संह के कहानी आलोचना संबंधी वचार का समर्थन करते हुए दिखाई देते हैं उन्होंने 'पाठ प्र क्रया' से आलोचना दृष्टि के वकास के लए अभीष्ट माना है । उनकी आलोचना पुस्तक 'कहानी पाठ और प्र क्रया' इस दिशा में महत्वपूर्ण स्थापना है । कथावाचक मधुरेश की कहानी आलोचना पुस्तक समीक्षा के रूप में वक सत हुई । 'हिंदी आलोचना का वकास' 'हिंदी कहानी का वकास' 'हिंदी उपन्यास का वकास' आदि पुस्तकों में मधुरेश की कथालोचना संबंधी वचार समा वष्ट हैं । वजय मोहन संह कहानीकार एवं कथालोचना दोनों में प्र सद् ध पाईहै । उनकी पुस्तक 'आज की कहानी' (1983) 'कथा समय' (1993) में कहानी एवं कहानीकारों के बारे में वस्तार पूर्वक वचार वमर्श कया है । इनके वचार में चंद्रधर शर्मा गुलेरी से लेकर

मुक्तिबोध एवं समकालीन कहानियां समाहित है ।

कथा आलोचना में कहानी की तरह उपन्यास आलोचना को भी समावेश कया जाता है । हिंदी उपन्यास साहित्य की आलोचना के वकास के केंद्र में प्रेमचंद के उपन्यास रहे हैं । प्रेमचंद के पूर्व एवं पश्चात दोनों स्थितियों में उपन्यास के संरचनात्मक एवं संवेदनात्मक दोनों पक्षों में क्रमशः वकास एवं परिवर्तन दिखाई देता है । राजेंद्र यादव ने 'अट्ठारह उपन्यास' शीर्षक से आलोचना ग्रंथ लखी, जिसमें 1951 से लेकर 1980 के बीच लखे महत्वपूर्ण उपन्यासों को उद्धृत करके उपन्यास आलोचना की नई दिशा का संकेत करते हैं । राजेंद्र यादव की इस आलोचना पद्धति को ध्यान में रखते हुए डॉ निर्मला जैन ने 'हिंदी आलोचना की बीसवीं सदी' में लखा है क-"यह लेख साहित्य के कसी जड़ ढांचे को स्वीकार नहीं करते कृति के कसी केंद्रीय बिंदु की तलाश कर उसके चारों ओर एक अलग ढांचा तैयार कया गया है जो इस बात का प्रमाण है क रचना की प्रयोगात्मकता के सामने पूर्व निर्धारित औजार व्यर्थ हो जाते हैं" । उपन्यास आलोचना के वकास में समकालीन कथालोचक की महत्वपूर्ण भू मका है ।जिसमें राजेंद्र यादव की पुस्तक "उपन्यास स्वरूप और संवेदना" में उपन्यास के संरचनात्मक रहस्य को वस्तार पूर्वक समझाया गया है । कथालोचक गोपाल राय ने उपन्यास आलोचना पर गहराई से काम कया है । उनके महत्वपूर्ण ग्रंथों में 'उपन्यास का शल्प' 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' 'हिंदी उपन्यास कोश' प्रमुख है । चंद्रकांत वांदिवदेकर ने 'उपन्यास स्थिति और गति' 'आधुनिक हिंदी उपन्यास सृजन और आलोचना' आदि महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की है । वजय मोहन संह ने "कथा समय' 'समय और साहित्य' 'बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य' में उपन्यास आलोचना को वस्तार दिया है । परमानंद श्रीवास्तव ने 'उपन्यास का यथार्थ और संरचनात्मक भाषा' 'उपन्यास का पुनर्जन्म' तथा 'उपन्यास के वरुद्ध उपन्यास' आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ लखें है ।

प्रगतिशील कथालोचक मधुरेश ने 'आज की हिंदी कहानी वचार और प्रतिक्रया'(1971), सल सला समकालीन कहानी की पहचान (1979), सम्प्रति समकालीन हिंदी उपन्यास में संवेदना और सरोकार (1983), हिंदी कहानी का वकास (1996), हिंदी कहानी अस्मिता की तलाश (1997), 'हिंदी उपन्यास का वकास(1998)' 'हिंदी आलोचना का वकास(2004), हिंदी उपन्यास सार्थक की पहचान (2001), समय समाज और उपन्यास (2013), ऐतिहा सक उपन्यास इतिहास और दृष्टि (2019), आलोचना का संकट (2019), उपन्यास सीढियों पर (2019), वीसवीं शताब्दी की हिंदी कहानी (2020), शनाख्त हिंदी उपन्यास का लेखा जोखा(2013) आदि ग्रंथों में कथालोचना के अंतर्गत उपन्यास की वकास की बात कही हैम । उपन्यास वधा पर प्रका शत ' शनाख़्त' नामक ग्रन्थ उनकी औपन्या सक आलोचना का उत्तम निदर्शन है।' शनाख़्त' में प्रेमचन्द-पूर्व और प्रेमचन्द-पश्चात् के चुने हुए उपन्यासों की सार्थक समालोचना है। साथ-ही-साथ हिन्दी से इतर अन्य भारतीय भाषाओं के उपन्यासों पर भी वस्तृत आलेख शा मल हैं । मधुरेश की औपन्या सक आलोचना का आधार कोई उपन्यास होता है। उसका देशकाल होता है। वह उसका गंभीर अध्ययन करते हैं। साथ-ही-साथ सघन पाठ तैयार करते चलते हैं। उपन्यास के प्रमुख पात्रों का वश्लेषण करते हैं। वास्त वकता, सम्भवता वश्वसनीयता के निकष पर उपन्यास की अन्तर्वस्तु और उसके पात्रों को परखते हैं। उनके श्वेत-श्याम पक्षों का उद्घाटन करते हैं। ' शनाख़्त' में मधुरेश की औपन्या सक आलोचना भारतेन्दु युग से वर्तमान सदी तक वस्तृत है। यह ग्रन्थ पढ़कर हम भारत के अतीत और वर्तमान को रचनात्मक रूप में समझ सकते है। आलोचक मधुरेश ने ' शनाख़्त' को हिन्दी उपन्यास की शनाख़्त के साथ ही 'मेरी आलोचना की शनाख़्त' के तौर पर भी लया जा सकता है । मधुरेश हिंदी आलोचना के वकास में ल लखाते है क-"हिंदी आलोचना का समकालीन

परिदृश्य तीखे वाद-ववाद और असहमतियों की अनुगूँज से भरा है ।ले कन इसी कारण आलोचना की तेजस्विता और सब कुछ के वावजूद उसके संवादी स्वरुप की रक्षा हुई है ।आलोचना की वश्वसनीयता और सम्मान घटे है । पछलग्गू और निहित स्वार्थों वाली आलोचना की जो एक नई पौध वक सत होकर इधर तेजी से पौड़ी है उसने भी जेन वन आलोचना का संकट बढाया है । यद प की आलोचना ने जेन वन लेखकों और उनकी रचनाओं की पहचान भी की है और रचना एवं आलोचना के अवसरवादी मुखौटे उतारे भी है" । समकालीन आलोचना के बारे में मधुरेश के ये वचार ऐसे ही नहीं दिए गए है गहन अध्ययन एवं वश्लेषण के उपरांत आलोचकीय पूर्वाग्रह को उद्घाटित कया है ।

कहानी के होल टाइमर आलोचक मधुरेश का मानना है क 'आलोचक का काम रचना से बहुत पहले शुरू होता है और रचना के बहुत बाद में ख़त्म होता है' । आलोचक का काम रचना को उसके वर्तमान मैं रख कर देखना नहीं होता बल्कि अतीत और भ वष्य के व्यापक फलक पर फैला कर उसे समझना होता है । आलोचक का दायित्व रचनाकार की स्थापना को एक संपूर्ण नि र्मती के रूप में ग्रहण करना है । मधुरेश का मानना है क हर लेखक के लए उसके निजी अनुभव संसार का अपना एक महत्व और उसके प्रति एक वशेष मोह होता है । निजी अनुभव का यह मोह ही लेखक को प्रभाव क्षमता और व शष्ट पहचान का कारण भी बनता, ले कन उनकी दृष्टि में रचना कर्म की इस क्षेत्र में लंबी और सार्थक यात्रा की महत्वाकांक्षा रखने वाले के लए यह भी जरूरी है क वह अपने अनुभवों के इस निजी संसार का अतिक्रमण करके अपने चारों ओर की जिंदगी से जुड़े । मधुरेश रचना को उसकी समग्रता में पकड़ने के प्रयास में वश्वास करते हैं । वह रचना का मूल्यांकन रचनाकारों के अपने प्रतिमानों के आधार पर करते हैं । इसी वजह से उनकी आलोचना व्यक्तियों पर केंद्रित समग्र कथा लेखन के ववेचन पर केन्द्रित है और कहीं भी निष्कर्ष देने या स्थापनाए करने के आग्रह से मुक्त अपने निश्चित उद्देश्य, वास्त वकता के संकेतों और वश्लेषण में सार्थकता खोजने और उनकी ऐतिहा सक परिप्रेक्ष्य में सुनिश्चित करने में सफल है । उनकी दृष्टि में कथालोचना निर्वैक्तिकता और इमानदार माहौल पैदा करती है । उनकी आलोचना में जहां रचना सामर्थ्य और रचना के बीच सभ्यता का आग्रह है वही रचना के ऐतिहा सक परिप्रेक्ष्य का भी अर्थ पूर्ण उद्घाटन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मधुरेश, हिंदी आलोचना का वकास, सु मत प्रकाशन, 2004.
2. मधुरेश, हिंदी कहानी का वकास, सु मत प्रकाशन, 2016.
3. डॉ लक्ष्मी नारायण लाल, हिंदी कहानियों की शल्प व ध का वकास, 1996.
4. रोहिणी अग्रवाल, समकालीन कथा साहित्य सरहदें और सरोकार, आधार प्रकाशन, 2012.
5. डॉ नामवर संह, कहानी: नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, 2006.
6. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का वकास, सु मत प्रकाशन, 1998.
7. यदुनाथ संह, मधुरेश की आलोचना: रचना सामर्थ्य की दायित्वपूर्ण आलोचना
8. पत्रिका- व वध संवाद, मधुरेश वशेषांक